EXCEL
public school

"स्वाद में मीठी, सौंधी है महक,
सुनने में सरल, बोलने में सहज, हिन्दी कर जाती हृदय पर असर"

धड़कन का दर्पण

संपादक की कलम से

संवेदनाओं और भावों के लिए किसी भाषा की कोई आवश्यकता नहीं होती पर अपने मत और विचारों को समझाने के लिए भाषा ही समर्थ साधन है। भाषा विहीन व्यक्ति केवल बुद्धि विहीन ही नहीं रहते बल्कि भाव हीन भी हो जाते हैं। गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा का ज्ञान उतना ही आवश्यक है जितना कि शिशु शरीर के विकास के लिए माता का दूध। आज हम फ़ोन से हर रोज़ कई संदेश पढ़ते हैं अगर कोई पुराना पत्र हाथ लग जाये तो आँखों की खिड़की मन के भावों के समुन्द्र को रोकने में असफल हो जाती हैं और हमारी यादें पलकों को लाँघ कर बह निकलती है। किसी के लिखे हुए शब्द हृदय को आंदोलित कर देते हैं तो बोले हुए शब्द तो आत्मा पर उतना ही प्रभाव डालने में समर्थ है जितना चाँद रात भर चकोर को जगाये रख सकता है। आज CBSE अंको की तुलना में भाषा कौशल पर अधिक ध्यान देती है और ये उचित भी है। हम भी बच्चों को भाषा के हर कौशल में बच्चों को उनकी रूचि और क्षमता के अनुसार प्रेरणा, सहयोग, प्रोत्साहन और पुरस्कार देते हैं। हिंदी भाषा में हम वाचन श्रवण लेखन के साथ तार्किक, रचनात्मक और कलात्मक अभियक्ति को भी बच्चों में विकसित करते हैं। ये अंक एक दर्पण है जिसमें से बच्चों के भाषा कौशल के साथ उनके उन्नत चरित्र और प्रगतिवादी सोच उनकी रचना/अभिनय के बादलों से निकल कर आपके दिल की गहराई में बूंद की तरह शीतलता दे जाएगी।

Career counseling

एक ऐसी सर्विस या सेवा है जो किसी व्यक्ति को उसके कैरियर बनाने में मदद करती है। अन्य शब्दों में इसे कभी कभी कैरियर कोचिंग या कैरियर डेवलपमेंट भी कहा जाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने कैरियर के लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। आज बच्चों की बहुमुखी प्रतिभा को ध्यान में रखकर कई ऐसे रोजगार के अवसर उपलब्ध है जो बच्चों को उनकी क्षमता और रूचि के अनुसार संतुष्टि और धन दोनों दे सकते हैं। कक्षा 10 के बच्चों को हिंदी भाषा से मिलने वाले रोजगार पर एक विशेष सत्र किया गया जिसमे विस्तार से सभी रोजगारो की योग्यता, शिक्षा संस्थान और वेतन के बारे में हर जानकारी दी गयी।

Let's taste the language

16 जून,2022 को हुए इस अनूठे कार्यक्रम के माध्यम से कक्षा 10 के बच्चों ने पुस्तक के पाठ के साथ ही प्रेमचंद की कहानी मंत्र को सच में परदे पर उतार दिया। बच्चों के अभिनय और संवाद कला ने सबको मोहित कर दिया। बच्चों ने बताया कि जो शिक्षा आपको बेहतर इंसान न बनाये वो मात्र एक कागज़ का टुकड़ा ही है। इस कार्यक्रम में प्रकृति के कोप से बचने के लिए उपाय भी बताये गए। बच्चो ने कौशल तो सीखा ही पर जो आत्मविश्वास, सहयोग और स्थिति के अनुसार खुद को ढालना भी सीखा।

Let's taste the language, again...

कक्षा 9 के बच्चों ने बताया कि किसी को उसके कपडे से नहीं बल्कि उसकी योग्यता से पहचाना जाना चाहियें। कवि सम्मलेन में बच्चों ने जिंदगी के हर पहलू को सुरों में समेट दिया। उनके वाचन कौशल से दर्शक मानों खो गए। आज सब मनोरंजन के लिए सोशियल मीडिया का सहारा लेते हैं तब इस प्रकार के कार्यक्रम सहराना के पात्र हैं।

भारत की पहली आदिवासी राष्ट्रपति पर आधारित नाटक मंचन

हिंदी के बच्चों ने हमारी पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के जीवन का मंचन करके ये सन्देश दिया कि भारत सही में एक लोकतंत्र है जिसमे सबको आगे बढ़ने के समान अवसर प्राप्त है।

सीप बनी मोती

रोज की तरह अपने घरोंदे में वापस पहुँची। थकान तो उतनी ही थी जितनी रोज होती है। सूरज शाम को पश्चिम की गोद में सोने जाता है तो अपने ख्वाबों में भी उसे पता होता है, अगले दिन सवेरा उसी को लाना है। मुझे भी पता था अगले दिन फिर काम पर जाना है। दिन भर की थकान को खत्म करने के लिए खुद से बातें कर रही थी। अनजान नंबर से मैसेज पढ़कर यकीन नहीं हुआ, यह हमारे स्कूल की रियूनियन का निमंत्रण पत्र था। 28 साल के बाद अपने पुराने स्कूल में जाने का खयाल ही मन को रोमांच से भर देता है। हमारी आँखों के आँसू भी कभी किसी को समझ नहीं आते। जब हम समझ ना पाए खुशी हो या गम, आँसू निकलते हैं। आँसू को भी नहीं पता होता यह किस लिए बह रहा हैं। शायद ये हैरानी के आँसू थे। शाम को जल्दी काम निपटा कर खिड़की के सहारे खड़ी हो गई। अतीत की धूल कितनी भी गहरी हो, यादों की एक छोटे से जल्दी से हट जाती है। 28 साल का समय बहुत था लेकिन एक पल में ही मैं अपने बचपन में पहुँच गई। मेरे पापा रक्षा विभाग में काम करते थे और मैं नागपुर में पढ़ी लिखी थी। हिंदी में बोलो, हिंदी में पढ़ो, हिंदी में तमीज और तहजीब से काम करो। अंग्रेजी सिर्फ एक विषय मात्र था इसका मतलब यह नहीं कि हम अनपढ़ थे अंग्रेजी में थोड़े कच्चे थे। यह वह समय था, जब दूसरी क्लास के बच्चे को पढ़ाया जाता था पेड़ को क्या कहते हैं? आजकल के बच्चों की तरह से नहीं जिन्हें बताया जाता है यह वही आम है जिससे 'माज़ा' बनती है। बचपन भी आखिर बीत ही गया। रात कितनी भी लंबी हो पर यह कितनी भी सुंदर हो सवेरा होते ही वह अपने लोक में चली जाती हैं। कुछ ऐसा ही हुआ मेरे पिता जो रक्षा विभाग में काम करते थे। उनको चेन्नई जाना पड़ा पैसे तो चेन्नई भारत का ही एक भाग है लेकिन उस समय मुझे लगा जैसे मैं मंगल ग्रह पर आ गई हूँ। अब तक मुझे हिंदी बस भाषा का माध्यम लगती थी लेकिन अब सब कुछ अंग्रेजी माध्यम था। अनजान शहर, अनजान स्कूल, अनजान बच्चों के साथ अगर भाषा भी अनजान हो तो रिश्ते भी बहुत अनजाने से लगने लगते हैं और देखें मेरी किस्मत मैं बिल्कुल उस बून्द की तरह थी जो अभी अभी बादलों से गिरी हो। पता नहीं था किसी कीचड़ में गिरूँगी किसी आग में जलूँगी या किसी सीपी में मिलूँगी। सीपी में मिलना कहाँ मेरी किस्मत में था लेकिन किस्मत तो उसी को कहते हैं ना, जो हमें कभी पता ही नहीं होती। पहले क्लास अंग्रेजी भाषा का था और टीचर ने अपने परिवार के बारे में लिखने के लिए कहा परिवार के बारे में पेज क्या पूरी किताब लिख सकती थी लेकिन उस समय अंग्रेजी जितनी आती थी मैं वह भी भूल गई। अचानक टीचर ने मुझे स्पर्श किया वह स्पर्श इतना आत्मीय था कि तेरे मन का भय मेरी आँखों से बह निकला और मैं रोने लगी। यही एक पल था जब टीचर ने मुझे सहारा दिया यह एक वह पल था शायद मेरी जिंदगी का ऐतिहासिक पल अगर मुझे उस समय सहारा ना मिलता मैं टूट जाती बिखर जाती। उस समय टीचर ने मुझसे पूछा मैं किस भाषा में लिखना चाहती हूँ और मेरे हिंदी के उत्तर देने पर उसने मुझे हिंदी में लिखने की आज्ञा दे दी। उसके बाद उस टीचर का साथ मुझे कुछ ऐसा मिला जैसे सोने में सुहागा मिलाते हैं जो अशुद्ध सोने को शुद्ध बनाता है। बात सिर्फ भाषा के अलग होने की नहीं थी, बात तो थी आत्मविश्वास थी कि और आत्मविश्वास विशेष रूप से बचपन में अगर टूट जाए तो बच्चा दो पैर होते हुए भी अपाहिज हो जाता है। उन्होंने एक लड़की से मेरा परिचय कराया जो हमेशा मेरे साथ रहने लगी। वह मेरी छोटी छोटी बातें सिखाती मेरी अंग्रेजी को सही करती उस टीचर उस सहेली और बाकी सभी सहपाठियों के साथ मेरा आत्मविश्वास जो अमावस की रात था वह पूनम की रात में बदलने लगा और जैसे शरद पूर्णिमा पर अमृत बरसता है इसी तरह से मेरी योग्यता भी पूरी तरह से निखरने लगी। बचपन के खिलाड़ी

थी मेरी टीचर ने सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए स्कूल में हॉकी टीम बनाई। कितने बड़े गर्व की बात है मैं राष्ट्रीय स्तर तक चार बार पहुँची मुझे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान पाने का इतना गर्व और खुशी नहीं हुई जितनी आज तक मुझे उस टीचर के सहयोग से हुई अगर वह ना होती तो शायद मैं आज इस मुकाम पर न होती। हर रोज बच्चों को तो टूटते देखती हूँ। कभी सहयोग नहीं मिलता कभी प्रेरणा की कसक रह जाती है। सच कहुँ अगर मुझे सहयोग और सराहा न मिलता तो मैं क्या मैं निराश हो जाती? नहीं मुझे जो आसानी से मिला वो मैं कठिनाई से पाती लेकिन कोशिश किये बिना हार तो नहीं मानती। मैंने बच्चों से यही कहना चाहती हूँ कि प्रेरणा मिले तो उत्तम अगर न मिले तो भी किसी प्रेरणा के लिए इंतज़ार न करे खुद कि प्रेरणा खुद बने अपने हाथों की लकीरो में मेहनत से सफलता के रंग भरे।

स्मितेंदु शिवदास
मुख्य संचालिका

पेड़

है पेड़ बड़े अनमोल धरा पर
इन पर ही निर्भर है हम सबका जीवन।
सुंदर सी प्रकृति की ये है शोभा
बिना इनके असंभव है जीवन।
पेड़ वायु को करते हैं शुद्ध
लेते हैं कार्बन के कण
बदले में देते हैं प्राण वायु
कहते हैं हम जिसको ऑक्सीजन।
मत काटो ये मानव मुझको
करो मुझ पर उपकार।
क्यों भूल गए तुम मानव मुझको
एक वृक्ष करें पुकार।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ
फल-फूल और छाया वे देते हैं हमको।
प्रदूषण से पर्यायवरण को बचायेंगे।
हराभरा जीवन बनायेंगे
हम भी पेड़ लगायेंगे।

गहना हेच् प्रसाद
कक्षा 8A

मेरी प्यारी मछलियाँ

मेरी प्यारी मछलियाँ, दुनिया में सबसे अच्छी हैं।
पल में यहाँ पल में वहाँ, उन्मुक्त चंचल।
मेरी सारी मछलियाँ खुशी से भर दे हर पल।
मेरी मछलियाँ मनमानी करती,
क्योंकि वो पानी में बसती।
मेरी मछलियाँ मदमस्त, मन में लाती हैं हलचल।
मेरी सारी मछलियाँ, मस्ती से भर दे हर पल।
मेरी प्यारी मछलियाँ, जैसे पानी की तितलियाँ।

प्रथम त्रिवेदी
कक्षा 9C

दोस्त : शक नहीं ,सिर्फ हक़

दिल के मौसम का पता नहीं चलता पर दिल्ली के मौसम के बारे में कहा जा सकता है क्योंकि भोर-सुबह हर समाचार चैनल चाय के साथ ही इसकी जानकारी परोस देता है। ये बात और है कि तेज़ धूप कब जगह ठंडी हवा और फुहार की बरसात ले आये पता नहीं। आज काफी साल के बाद ट्रेन में सफर करने का मौका मिला तो रेल पटरियों पर जिस गति से दौड़ रही थी उसी गति से मेरा मन अतीत की धुंध में खो गया। जब हम लखनऊ में रहते थे। नबाबी शान तो नहीं पर नखरे में हमारी दादी का जबाब नहीं था। जिसकी तरफ देख ले वो सिहर जाये। उस समय एक दोस्त थी जया श्रीवास्तव। ५० साल से ज्यादा इस दोस्ती को हो गए थे। साल में चार बार ऋतुएँ भी आती हैं और दादी और उनकी दोस्त के बीच एक दिन में चार बार मौसम बदल जाता था। कभी बोल-चाल बंद कभी बिना बात किए खाना को न छूना। ये सब दोस्ती के मसालें हैं जिससे मित्रता में स्वाद आता है। मुझे अच्छे से याद है जब मम्मी ने बताया था कि जया जी आलमबाग छोड़ कर गोमतीनगर में रहने लगी। पहले तो सबको लगा मामूली सी बात है। दोनों दोस्त छुट्टी वाले दिन गप्पे लड़ाने तो मिलेंगी ही पर हमें कानों पर विश्वास नहीं हुआ। जब पता चला वो बिन धागे की दोस्ती टूट गयी है। दादी के घर काम करने वाली रानी रजाई में रुई भर रही थी। जब जया जी की बेटी कल्पना अपने नए झुमके दिखाने आयी। सच में बहुत सुन्दर झुमके थे। कुंदन का काम तो मानों विश्वकर्मा ने खुद किया हो। थोड़ी देर बाद ही हाय -तौबा मच गयी। झुमके गायब थे कुछ भी खो जाये, पहला शक नौकर पर ही करते हैं। ये हमारे समाज की निम्न मानसिकता का प्रतीक है पर ये ही तो कटु सत्य है। बड़े से बड़े पेड़ को सुखाना हो तो जरा सा मट्ठा ड़ाल दीजिये,दिनों में ही पेड़ जड़ से उखड जायेगा। संदेह भी दोस्ती के लिए दीमक है जो इसकी नीव को हिला देता है। जया जी अपनी बेटी को सच मान रही थी और दादी को पूरा विश्वास था कल्पना पर। बस फिर दोस्ती खत्म। दोनों ने एक दूसरे का मुँह न देखने की कसम खा ली। झटके से मेरा ध्यान टूटा तो हम चारबाग स्टेशन पहुँच गए थे।

लखनऊ काफी बड़ा ही लगा पर इतने सालों बाद इसकी सड़के सँकरी और वहाँ ज्यादा लगे। घर पहुँच कर आराम कर रही थी तो देखा दादी दही-बड़े बना रही थी। मैंने पूछा तो बोली आज जया के पोते का जन्मदिन है इसलिए उसके पसंद के पकवान बना रही हूँ और जया तुम सब बच्चो के लिए पनीर के पकोड़े ला रही है। मैंने सोचा ये क्या हो गया दोनों ने तो सालो से बात नहीं की तो ये दूसरे के बच्चो के लिए क्यों चीजे बना रही है। हमको हैरान देख कर दादी बोली अब दीदे फाड कर न देखो। तुम्हारी बुआ का बेटा बिना बताये किसी के घर चला गया था मैं तो पागल सी हो गयी थी। बाद में पता चला उसका अपहरण हो गया। जया के परिवार ने 10 लाख का इंतज़ाम किया। पुलिस की मदद से बच्चा सही-सलामत मिल गया और पैसे भी बच गए। शेरो की दोस्ती इतनी कमजोर नहीं होती कि कुत्ते उसका फायदा उठा ले। हम सबकी महफ़िल छत पर जमी थी। ताज़ी हवा के झोंके थे। गर्मियाँ आ रही थी तो गर्म कपडे तह करके संदूक में रखने थे और रजाई की पुरानी रुई साफ करनी थी। अचानक एक चीख सुनाई थी। कल्पना जो रजाई से रुई निकाल रही थी। अपने हाथ में रानी का झुमका ले कर खड़ी थी। सब हक्के-बक्के रह गए। मैंने दादी से कहा कि इसी एक झुमके के कारण आप दोनों की दोस्ती टूट गयी थी। दादी बोली ये किसने कहा? दोस्ती का अर्थ दिन में चार बार मिलना नहीं होता, न ही हर बात बताना होता है। तभी शांत बैठी जया जी बोली बेटा दोस्त को हम खुद चुनते हैं बाकि खून के रिश्ते तो भगवान बनाता है। हम दूर थे पर कोई पल नहीं था जब मैंने तेरी दादी को याद न किया हो। दोस्ती सिर्फ सुख में साथ का नाम नहीं, ये दुःख की पगडण्डी पर हमकदम बनने का नाम है। दोस्ती एक एहसास है जो तस्वीर में

साथ खड़े रह कर मुस्काने से नहीं दिखता बल्कि संकट में साथ खड़े रहने से निभता है। ये दोस्ती एहसास है रिश्तो के समुद्र का दूध और पानी सा दूध पानी को खुद को मिला कर उसकी कीमत बढ़ाता है पानी खुद जल कर दूध को बचाता है।

भव्या मिश्रा- कक्षा 11A

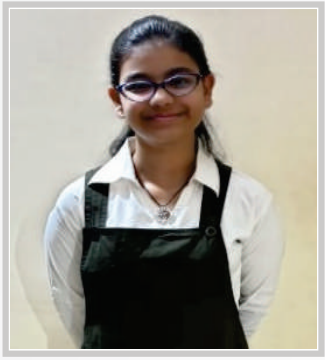

मित्र : साये सा साथ

कुछ तो बात है कि नदी के किनारे न मिले पर साथ रहते हैं ,उस एहसास को कोई क्या नाम दे जिसकी याद जब भी आये आँखों को नम कर दे। आज बस स्टॉप पर दो छोटे बच्चों को बॉय करते देखा तो अनायास ही उसकी याद आ गयी। जब हम कानपूर के जवाहरनगर में रहते थे में १० वीं कक्षा में पढ़ती थी घर के बिलकुल सामने एक आँचल नाम का अनाथालय था। हर समय हो-हल्ला मचा रहता जिस पर मुझे गुस्सा आता था क्योकि पढने में समस्या होती थी। कभी शोर पर ध्यान नहीं जाता, कभी किसी की ख़ामोशी बैचेन कर देती है। एक सुबह आँचल पर नज़र गयी तो एक कोने में बैठी लड़की दिखी। उसकी आँखों में जो खालीपन था उसने मुझे अंदर चीर दिया पूरा दिन न जाने क्यों उसी का चेहरा आँखों के सामने था। मै थी तो स्कूल में, पर मन उसकी आँखों की सूनी पलकों में कैद था। अब ये रोज़ की बात हो गयी एक कोना, वो लड़की और मैं। कहते है न सदिया बीत जाती है बात नहीं होती पर एक लम्हे में दूरी खत्म हो जाती है। सर्दी की शाम झील के पास साइकिल चला कर लौट रही थी तो देखा कोई झील के बहुत पास खड़ा है मानों अपनी जीवन की ज्योति को इस झील के जल में डुबो कर खत्म कर देना चाहता है। मेरा दिल धक सा हो गया। ये तो छोटी बच्ची .... अरे ये तो वही आँचल वाली बच्ची है। मैं कब दौड़ कर उसके पास गयी और उसे जोर से खींच कर दूर ले गयी। थोड़ी देर बाद जब हम दोनों सामान्य हुए तो मैंने पूछा क्यों मरने चली थी? मुझे बैचेन करने वाली आँखों ने मुझे देखा और बोली मैं मरने नहीं जा रही थी। मैं बातें कर रही थी। लोग झील मे पत्थर फेंकते हैं, मैं उन पत्थरों से पूछ रही थी कि जब कोई आपको ठुकरा देता है तो कैसा लगता है?

ये उम्र और इतना वैराग्य, मैं निशब्द थी। उसके साथ काफी समय वहीं बिताया। उसका मन एक तलस्म था जिसका भेद बस वहीं जानती थी। अब मैं उससे मिलने आँचल जाने लगी। हर रोज़ मिलते-मिलते मालूम हुआ उसके माता-पिता जिन्दा है लेकिन उसको अपने पास नहीं रखना चाहते। बस पैसे भेज देते हैं। जिसे दुनिया में लाने के लिए आप जिम्मेदार हो उसी को अनाथ की तरह छोड़ने वाले किस मिट्टी के बने होंगे? अब हम दोनों दोस्त थी। घंटो की बातें, उसकी हँसी से मैं तो हैरान थी, ये हँसना भी जानती है। अपनों ने जो गैरो सा बर्ताव उसके साथ किया था उसके कारण उसकी हँसी कहीं मर सी गयी थी। हमारी दोस्ती ने उसे जिन्दा कर दिया। मैं अपनी नानी के घर गयी तो उसने अपने हाथों से मेरी नानी के लिए तस्वीर बनाई जिसे देख कर मेरी नानी के मुँह से उसके लिए ढेरो आशीष निकले और उन्होंने अपने हाथों से उसके लिए शाल बना कर दी। वापस आ कर जब मैं 'आँचल' गयी तो पता चला गौरी को किसी परिवार ने गोद ले लिया था। मैं बहुत रोई जैसे मेरी सगी बहन मुझे दूर हो गयी हो रोई। माँ ने समझाया भी कि उसको दोस्त से ज्यादा परिवार की जरुरत है। वो जहाँ रहे खुश रहे, दोस्ती साथ रहने का नहीं, साथ देने का नाम है।

तभी आँचल की बाई जी मुझे चिट्ठी दे गयी जो गौरी मेरे लिए छोड़ कर गयी थी। मैंने सोचा खूब सारी बातें लिखी होंगी पर उसमे लिखा था शुक्रिया मेरी दोस्त! मुझे जीना सिखाने के लिए।बस इतना ही! मैं कभी उसे

भूल ही नहीं पायी। हर समय वो मेरे साथ थी याद बन कर। दो माह बाद ही उसने मुझे फोन किया। हम हफ्ते में एक बार ही बात कर पाते। 20 साल बाद वो भारत वापस आयी। मैं सोच रही थी हम एक दूसरों को कैसे पहचान पाएँगे? क्योंकि हम इतने साल नहीं मिले थे। पर ये क्या? मैं उसकी आँखों अपने लिए तड़फ देख कर और वो मेरी आँखों में उसकी याद देख कर एक दूसरे को पहचान गए। आँखों से गंगा-यमुना बह रही थी। अब हम एक ही शहर में रहने वाले थे पर क्या हम कभी दूर हुए भी थे? नहीं। दोस्ती वो रिश्ता नहीं जिसे दूरियाँ कम कर सके। ये वो मोती भावना के समुन्द्र से निकलता है। दोस्त, दोस्त है चाहे धूप हो या छाँव दूर हो या पास, नहीं कम होती इसकी मिठास।

अनुश्री चटर्जी - कक्षा 12A

मेरी बेटी : मेरा अभिमान

कोमल की ननद मालविका जो पढ़ाई में तो अच्छी नहीं थी,पर उसकी उँगलियाँ जब कोई कलाकृति बनाती थी तो लगता था हम अजंता की मूर्ति के सामने है। हीरा अपना मोल नहीं बताता पर वो होता तो अनमोल ही है। उसके परिवार वालो की नज़र पारखी नहीं थी। इस कारण उसको न उसे सम्मान मिला न उसके हुनर की कद्र हुई। उसी घर में एक और कलाकार था कोमल का देवर जो कहानी में आत्मा बसा देता था। हर किसी की नज़र में वो सरस्वती का वरदान था। एक ही घर में दो रत्न थे पर एक को शान दूसरे को शर्म से देखा जाता था। अमावस्य की रात घर का भाग्य रूठ गया। जिस घर में कन्या का अपमान हो वहाँ लक्ष्मी कब तक रहती है? कोरोना का कहर कुछ ऐसा टूटा कि सारा व्यापार बन्द हो गया खाने के लाले पड गए। कोमल की सारी पूँजी ख़त्म हो गयी। अब घर का खर्चा कैसे चलेगा? बेचारी यही सोच रही थी। राज को उसके लेखों के लिए तारीफ तो मिली थी पर धन उतना नहीं मिला जिससे परिवार की जरुरत पूरी हो सके। मालविका ने अपनी भाभी को बताया कि वो परिवार की मदद कर सकती है पर बिना किसी को बताये। कोमल ने उसका साथ दिया क्योंकि अब उसे भी आज़ादी चाहिए थी बेजान रूढ़ियों से, सड़ी हुई मानसिकता से जो लड़कियों को न हक़ देते है, न ही फ़र्ज़ पूरा करने देते है। कोमल ऑनलाइन काम करना जानती थी। बस मालविका की कला और कोमल का दिमाग दोनों मिल गए। आप तब तक अकेले रहते हो जब तक आप खुद का साथ न दो। अब दोनों ने ठान लिया कि देश की आज़ादी सबके हिस्से का प्रसाद है और हमें अपना सूरज खुद ही खींच कर लाना होगा। मेहनत की परछाई सफलता ही तो है। उनको भी सफलता मिली। चाशनी की मिठास सोंधी बनती है जब उसे पूरे मन से हौले-हौले पकाया जाये वैसे ही मेहनत सही तरह धीरे धीरे लगातार की जाये तो किस्मत खुद आकर दरवाजा खटखटाती है। ऑनलाइन काम से पूरे घर को बड़ा फायदा मिला। अब सबके मुँह बंद थे। आता धन किसी को बुरा नहीं लगता पर किसी ने खुल कर तारीफ नहीं की। पिछड़ी सोच को गलत मानने के लिए कलेजा चाहिए जल्दी ही सब सामान्य हो गया। अब एक दुकान थी जिसमें शहर की सबसे बेहतरीन कलाकार की कलाकृतियाँ बिकती थी और देश विदेश की नामी कम्पनियाँ उसकी कद्रदान थी। उसके बचपन के प्यार विराट का परिवार जब हाथ माँगने आया तो मालविका को विशवास था कि जाति अलग होने के कारण घरवाले मना कर देंगे। उसकी दादी ने वही किया भी। उसके कानो को मानों ऐसी ख़ुशी हुई जैसे बंजर जमीन पर अंकुर फूटा हो जब उसके पिता ने कहा, "मेरी बेटी आज़ाद देश की नागरिक है और वो जैसी चाहेगी उसे ही अपना हमसफ़र चुनेगी।" आज दुल्हन बनी मालविका ने जब खुद को दर्पण में देखा तो दर्पण ने कहा "आज़ादी का महोत्सव है, झूम कर नाच कि घुँघरू टूट जाये।"

मालविका- कक्षा 11B

कामकाजी महिलाओं की चुनौती:

कामकाजी महिलाओं का यूँ तो समाज में सम्मान बढ़ जाता है किंतु सम्मान के साथ-साथ उनसे उम्मीदें भी बढ़ जाती हैं। कार्यालय में एक अच्छे कार्यकर्ता के साथ-साथ घर में भी एक अच्छी माँ, बेटी, बहन और पत्नी को बनना आसान तो नहीं होता। कामकाजी महिलाओं के ऊपर बहुत ही जिम्मेदारी आ जाती हैं। कार्यालय में होते हुए भी घर परिवार पर ध्यान देना जरूरी होता है और घर में होते हुए भी काम के बारे में सोचना आवश्यक ही रहता है। दोनों को ही संभाल कर चलना पड़ता है। यदि जरा सी भी ऊँच -नीच हो गई तो पूरी दुनिया आ जाती है दोष देने के लिए। कामकाजी औरते बाहर काम हमेशा करती रहें यह भी तो जरूरी नहीं है। कई महिलाओं को शादी के बाद उनका काम छोड़ना पड़ता है इसी तरह कई महिलाओं को उनके छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल करने के लिए काम छोड़ना पड़ता है। कई बार इस कारण उनके बाहर जाकर काम करने की आदत छूट जाती है। जब कोई औरत गर्भवती होती है तो उनका बाहर जाना बंद हो जाता है। जिस कारण के काम पर नहीं जा पाती। समाज, जो काम काज करने से सम्मान देता है वही कई बार रोक भी लगा देता है। कामकाजी महिलाओं को काम पर जाने के लिए सुरक्षित वातावरण और परिपक्व सोच की जरुरत है। महिलाओं को सुरक्षा के कारण रात में बाहर जाने नहीं दिया जाता। जब कोई महिला काम से वापस लौटती है तो खुद को हमेशा सुरक्षित महसूस करें ये न केवल महिलाओं के लिए बल्कि उन्नत समज के लाये जरुरी है। वही देश संपन्न होता है जहाँ महिला मुस्काती है हम सबको कामकाजी और घरेलू सभी महिलाओं की सहायता करनी चाहिए तभी कामकाजी महिलाएँ भी अपनी चुनौतियों का सामना कर पाएँगी।

सौम्या गुप्ता - कक्षा 10E

सौम्या गुप्ता
एक फूल की चाह
- सियारामशरण गुप्त

एक बड़े स्तर में फैलने वाली बीमारी बहुत भयानक रूप से फैल रही थी
मैं बाहर खेलने जा रही हूँ।
रुको सुखिया, बाहर मत जाओ!
किसी तरह इस बार मैं उसे बचा लूँ।
किंतु पिता का डर सच हुआ। सुखिया बीमार हो गई।
मुझे देवी के प्रसाद के एक फूल लाकर दो।
पिता चिंता में मनमारे बैठा था।
वह सोच रहा था कि सुखिया को कैसे बचाएँ। उसे पता भी नहीं चला कि कब अँधेरी रात हो गई।

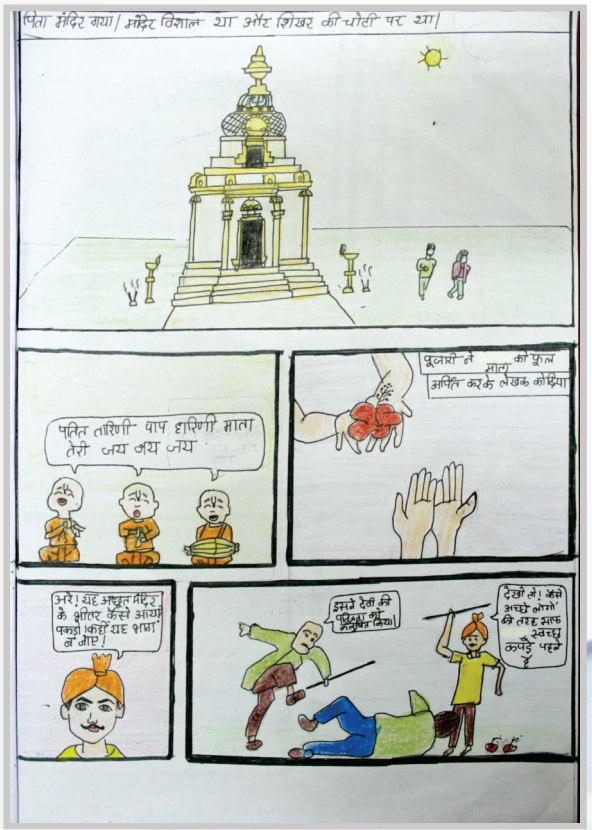

पिता मंदिर गया। मंदिर विशाल था और शिखर की चोटी पर था।
पतित तारिणी पाप हारिणी माता तेरी जय जय जय
पूजारी ने माता को फूल अर्पित करके लेखक को दिया
अरे! यह अछूत मंदिर के भीतर कैसे आया? पकड़ो! कहीं यह भाग न जाए!
इसने देवी की पवित्रता को कलुषित किया।
देखो तो! कैसे अच्छे लोगों की तरह साफ स्वच्छ कपड़े पहने है

एक बड़े स्तर में फैलने वाली बीमारी बहुत भयानक रूप से फैल रही थी
मैं बाहर खेलने जा रही हूँ।
रुको सुखिया, बाहर मत जाओ!
किसी तरह इस बार मैं उसे बचा लूँ।
किंतु पिता का डर सच हुआ। सुखिया बीमार हो गई।
मुझे देवी के प्रसाद के एक फूल लाकर दो।
पिता चिंता में मनमारे बैठा था।
वह सोच रहा था कि सुखिया को कैसे बचाएँ। उसे पता भी नहीं चला कि कब अँधेरी रात हो गई।

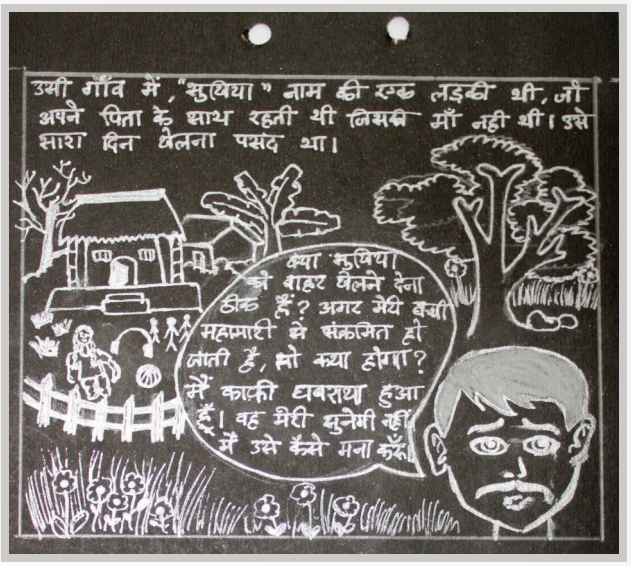

हर कोई भावुक है। अब एक बहुत ही शक्तिशाली महामारी ने पुरी तरह से गाँव में अराजकता बढा दी। माँएँ अपने बच्चों के मृत्यु के कारण, रो रहे हैं।
मैं अपने बच्चों को खोना नही चाहता।
भगवान, कृपया हमें शांति से रहने दे। यह बीमारी सभी जगह फैल रही हैं

उसी गाँव में, "सुखिया" नाम की एक लड़की थी, जो अपने पिता के साथ रहती थी जिसकी माँ नही थी। उसे सारा दिन खेलना पसंद था।
क्या सुखिया को बाहर खेलने देना ठीक हैं? अगर मेरी बच्ची महामारी से संक्रमित हो जाती है, तो क्या होगा? मैं काफी घबराया हुआ हूँ। वह मेरी सुनेगी नहीं मैं उसे कैसे मना करूँ।

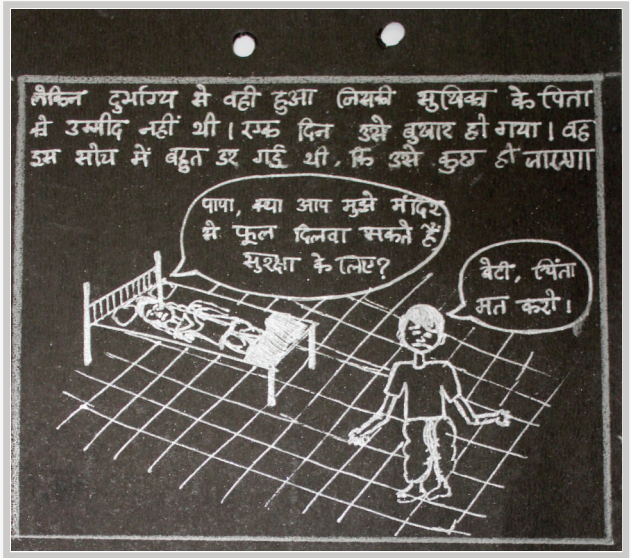

लेकिन दुर्भाग्य से वही हुआ जिसकी सुखिया के पिता को उम्मीद नहीं थी। एक दिन उसे बुखार हो गया। वह इस सोच में बहुत डर गई थी, कि उसे कुछ हो जाएगा।
पापा, क्या आप मुझे मंदिर से फूल दिलवा सकते हैं सुरक्षा के लिए?
बेटी, चिंता मत करो।

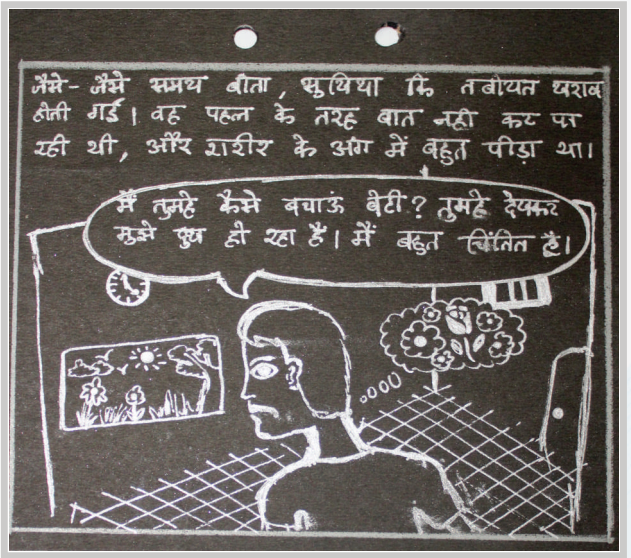

जैसे- जैसे समय बीता, सुखिया कि तबीयत खराब होती गई। वह पहले के तरह बात नही कर पा रही थी, और शरीर के अंग में बहुत पीड़ा था।
मैं तुम्हे कैसे बचाऊं बेटी? तुम्हे देखकर मुझे दुख हो रहा हैं। मैं बहुत चिंतित है।

तो उस रात, सोने से पहले वह अपने बच्चे को देखने गया। वह इंतज़ार कर रहा था कि सुखिया अब कुछ बोलें,
मेरे प्रीय बेटी, तुम बहुत उदास हो, मेरा दिल भी दुखता हैं। तुम इतने कमज़ोर हो गए हो। मुझे फिरसे फूल लाने को कहो। मैं हिय-क्रियाएँ नहीं।

लेकिन, किस्मत सुखिया और उसके पिता के साथ नही थी। अब उसके पिता के चारों ओर में अँधेरा छा गया था। उसे बचाने का कोई उपाय नहीं थी। उदासी से उसने ऊपर आसमान को निहारा
यह बीमारी गहरा अंधेरा है जिसने मेरी मासूम बच्ची को पकड़ लिया है। यह तारे मुझे जलते कोयले की तरह लग रहे हैं
सुखिया

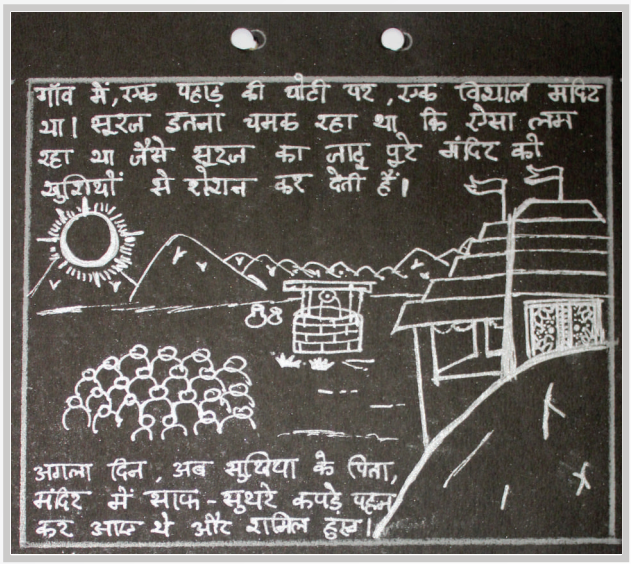
गाँव में, एक पहाड़ की चोटी पर, एक विशाल मंदिर था। सूरज इतना चमक रहा था कि ऐसा लग रहा था जैसे सूरज का जादू पूरे मंदिर की खूबियों से रोशन कर देती हैं।
अगला दिन, अब सुविधा के पिता, मंदिर में साफ-सुथरे कपड़े पहन कर आए थे और शामिल हुए।

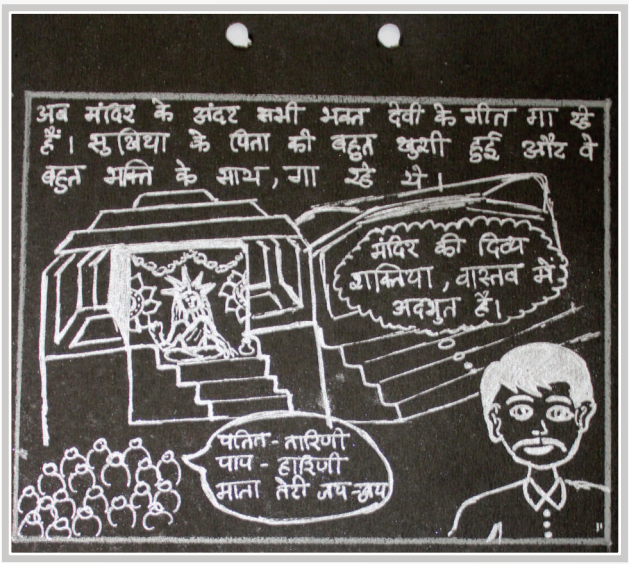
अब मंदिर के अंदर सभी भक्त देवी के गीत गा रहे हैं। सुविधा के पिता की बहुत खुशी हुई और वे बहुत भक्ति के साथ, गा रहे थे।
मंदिर की दिव्य शक्तियां, वास्तव में अद्भुत हैं।
पतित-तारिणी पाप-हारिणी माता तेरी जय-जय

सुविधा के पिता अब अंदर जाते हुए, प्रसाद और फूल प्राप्त करने, के लिए, देवी की पूजा में शामिल हुए।
पंडित जी ने मुझे प्रसाद और मुट्ठी भर फूल दिए हैं। मैं बहुत आभारी हूँ। मेरी बेटी बहुत खुश होगी। मुझे यहाँ से अब चलना चाहिए।
मंदिर

तभी किसी ने सुविधा के पिता को देखा और उन्हें एक अछूत के रूप में पहचाना। तब, सब ने उसे पीटा और सात दिन के लिए, बंदीगृह में डाल दिया।
तुम एक अछूत हो। एक पवित्र जगह में प्रवेश करके, तुमने देवी का अपमान किया है। तुम्हें जेल जाना चाहिए
क्या आप सब सिर्फ समानता के गीत गा रहे हैं? कृपया मुझे मत मारो, मुझे जाने दो।

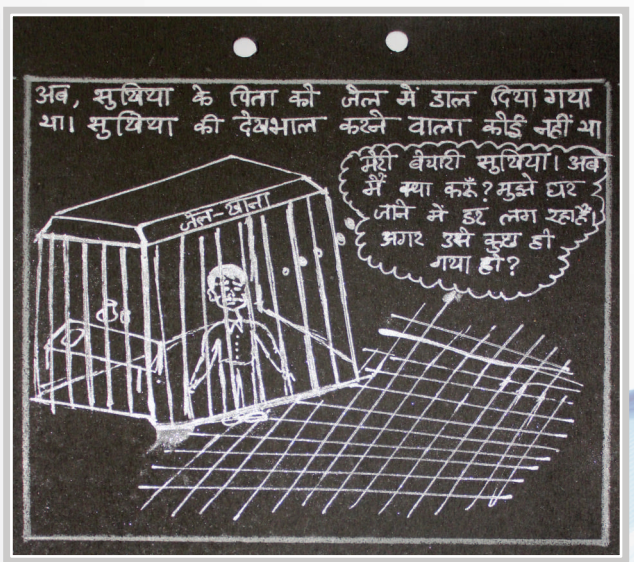
अब, सुविधा के पिता को जेल में डाल दिया गया था। सुविधा की देखभाल करने वाला कोई नहीं था
जेल-खाना
मेरी बेचारी सुविधा। अब मैं क्या करूँ? मुझे घर जाने में डर लग रहा है। अगर उसे कुछ हो गया हो?

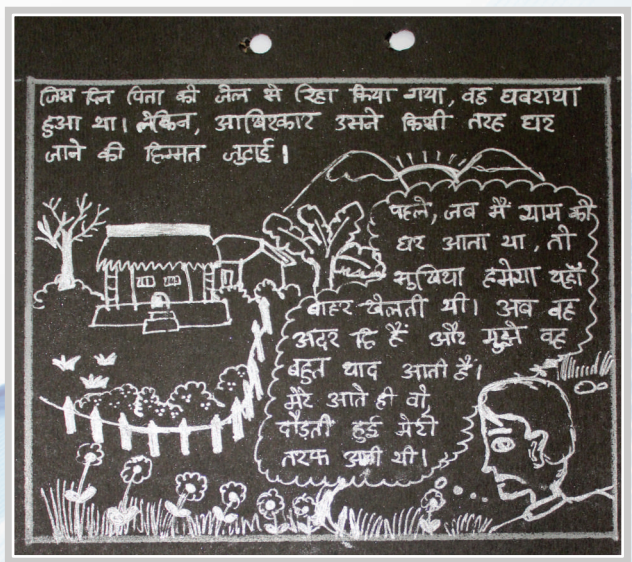
जिस दिन पिता को जेल से रिहा किया गया, वह घबराया हुआ था। लेकिन, आखिरकार उसने किसी तरह घर जाने की हिम्मत जुटाई।
पहले, जब मैं गाम को घर आता था, तो सुविधा हमेशा यहाँ बाहर खेलती थी। अब वह अंदर है हैं और मुझे वह बहुत याद आती है।
मेरे आते ही वो, दौड़ती हुई मेरी तरफ आती थी।

बुलंद भारत की बुलंद लेखनी

भारत सरकार के गंगा सफाई मिशन से जुड़े कालांतर ने आज़ादी का अमृत महोत्सव आयोजित किया जिसमे देश से हज़ारों बच्चों ने भाग लिया मालविका कक्षा 10 ने कई दौर को पार लिया और उसकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता ने ऐसा प्रभाव डाला कि सब मंत्रमुग्ध हो गए और हमारी प्रिय मालविका ने देश में कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

नन्हे छात्रों/छात्राओं का सुनहरा उजियारा

कला एकीकरण को ध्यान में रख कर दी गयी परियोजना इतने अच्छे स्तर की थी वो अंतरराष्ट्रीय समाचार पत्र हम हिंदुस्तानी में छप गयी इसमें बालिका शिक्षा की उपयोगिता के बारे में बताया गया था।

पंख शिक्षा के

पार्थ मोकाशी, 10 C EPS ,MYSORE

'रोज़ा' एक गॉंव की साधारण सी बच्ची पर आँखों में बसे असाधारण से सपने । वैशाली और रामू किसानी करते थे और समाज के नियमो से उतने ही बंधे जितने महाजन से कर्ज से। रोजा पढ़ना चाहती थी क्योकि उसके पिता ने कहानी में बताया था कि शिक्षा न पाने के कारण ही वो लोग आज तक आगे न बढ़ पाए । उसने वैज्ञानिक बनने की ठान ली । जब उसने अपनी गुल्लक से पैसे से पढ़ने की बात की , तो रोजा की समझदारी भरी जिद के आगे माता पिता हार गए । उसके माता पिता ने उसका साथ देने का फैसला किया पर पूरा गॉंव उनके खिलाफ हो गया । यही तो होता आया है कि जब हम ऊपर उठने की सोचते है तो हज़ारो पिछड़ी सोच वाले हाथ हमे पीछे धकेलने को तैयार हो जाते है ।अब उसकी माँ ने सोच लिया कि बेटी को शिक्षित बनाने के लिए हमे उसे खुद से दूर करना भी पड़े तो ये भी कर देंगे ।रामू शहर में बीज लेने जाता था ,वही उसकी मुलाकात एक पुराने दोस्त से हुई थी बस राजू ने उससे सारी बात फोन पर बताई ।जब उसके दोस्त को पता चला कि रामू गॉंव में रह कर अपनी बेटी को पढ़ाना चाहता है,वह तुरंत इस नेक काम के लिए तैयार हो गया ।शहर में रोजा को एक संस्था में अपने स्कूल में दाखिला दिया ।मेहनत से मिली चीज अनमोल होती है तो हम उसकी कदर भी करते है ।रोजा दिल लगा कर पढ़ती और साथ में संस्था के छोटे छोटे काम भी करती ।समय पंख लगा कर उड़े और 12 साल में रोजा ने काफी मेहनत से पढ़ाई पूरी की और इनाम को तौर पर उसे विज्ञान अनुसंधान में नौकरी मिल गयी ।अब वो हर समय जी लगा कर काम करती।

देश महामारी से ग्रस्त हुआ तो वैज्ञानिको ने दवाई भी बना ली अब सबको बीमार के प्रति सचेत रहने की सीख दी जा रही थी ।रोजा को उसकी टाइम के साथ एक गॉंव में जाना था वह खुशी और दु:ख से पागल हो गयी ये उसका गॉंव है और इतने सालो में उसने एक बार भी अपने परिवार से बात नहीं की थी ।गॉंव पहुंचने पर पता चला कि रोजा के जाने के कुछ समय बाद ही सबको पता चल गया था कि वो पढ़ने गयी तो उसके माँ -बाप को गॉंव से निकाल दिया गया था । उसके माँ – बाप आज भी उसके आने का इंतज़ार कर रहे थे उसनी सब लोगो के सामने अपनी माँ -पापा के पैर छुए सब हैरान थे। रोजा ने माइक हाथ मे लिया और बोली मेरे माता पिता ने अपना जीवन समाज की गलत रीतो को निभाते हुए बिताया लेकिन अपनी बेटी के लिए वो समाज से भी भिड़ गए अगर इस गावं की हर बच्ची पढ़ती तो भारत की तस्वीर ही बदल जाती । कब तक हम समाज की लिए अपने बच्चो का भविष्य अंधेरे में डालेंगे ?अब बस जागो और पढ़ाई पर सबका उतना ही हक़ है जितना पंछी का उड़ान पर।

नन्हे दिए

आर्या पूवरया , Excel public school Class 10 Mysore

81. आर्या पूवरया - भारत : मेरी मातृभूमि

गर्व है मुझे इस पुण्य भूमि पर,
गर्व है मुझे इस शक्तिशाली माँ पर,
गर्व है मुझे इस वीरों के देश पर,
गर्व है मुझे इस भारत देश पर।
यह देश है सुंदर जीवों का ,
यह देश है गुणो के अमीरों का,
इस देश मे अनोखा ताजमहल,
हम प्रेम से निकाले समस्या का हल ,
गर्व है मुझे इस भारत देश पर।
वीरों के बलिदान की कहानी भारत,
हर धर्म को पालनभूमि है भारत,
सबको गले लगाता है भारत,
आने वाले भविष्य को पुकारे भारत,
गर्व है मुझे इस भारत देश पर ।
सदियो से देता हिंदुस्तान,
जग को एक ही सीख,
सत्य अंहिसा प्रेम सबमें समान,
हिंदु मुसलमान ईसाई सिख,
गर्व है मुझे इस भारत देश पर ।
दिया मुझे भारत माँ ने,
जन्म, माता पिता और पनाह,
सिखाया है करना ,सबका सम्मान,

• 209 •

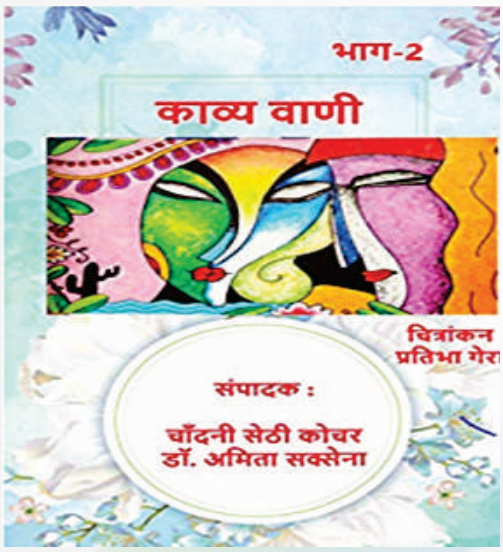

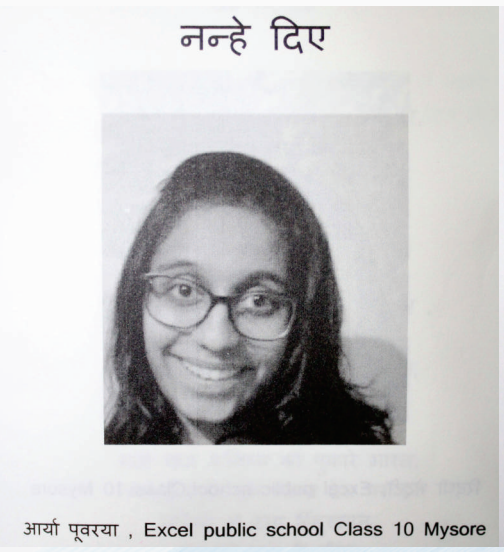

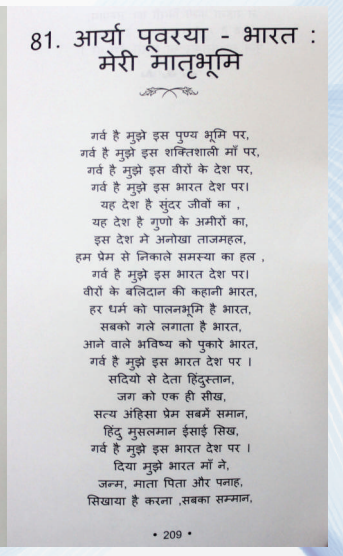

ये कथाएँ: एक दर्पण

डॉ अमिता सक्सैना हर साल अपनी एक किताब उन बच्चों को मुफ्त में देती है जो सरलता से किताब नहीं पढ़ पाते हैं। इसी श्रंखला में इस साल उनकी प्रकाशित पुस्तक 'ये कथाएँ : एक दर्पण' में उन्होंने फिर से नए लेखकों को भी मौका दिया। बच्चो की कहानी लेखन प्रतिभा से प्रभावित हो कर उन सभी को हरियाणा के NGO FUTURE ASPIRATION ने सरहाना पत्र भी प्रदान किया।